बहारे तहरीर
(हिस्सा3)

عبد مصطفی
AM ABDE MUSTAFA

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

abdemustafaofficial.blogspot.com

जादू करवा दिया है

मौलाना शहज़ाद क़ादरी तुराबी फरमाते है कि मैं अपने पीरो मुर्शिद, हज़रत अल्लामा सैय्यद तुराबुल हक़ क़ादरी अलैहिर्रहमा की बारगाह में हाज़िर था, एक शख्स आया और कहने लगा कि मुझ पर किसी ने जादू करवा दिया है, आप इलाज कीजिये।
आप अलैहिर्रहमा ने अपनी आदत के मुताबिक़ तावीज़ अता फरमायी और खूब तसल्ली दी मगर वो शख्स मुतमईन नहीं हुआ और बार बार यही कह रहा था कि मुझ पर किसी ने जादू करवा दिया है।
आखिर में शाह साहब अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि ऐसा लगता है कि तुम पर जादू किसी मामूली आदमी ने नहीं करवाया बल्कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम के दौर के सबसे बड़े जादूगर "सामरी" ने तुम पर जादू करवाया है।
ये सुनते ही वो तावीज़ लेकर मुस्कुराता हुआ चला गया और मौजूद हाज़िरीन भी मुस्कुरा दिये।

(ملخصًا: خطبات ترابی، ج5، ص268، زاویہ پبلی شرز لاہور)

हमारी आवाम में एक तबक़ा ऐसा भी है जिन्हें हमेशा लगता है कि हम पर किसी ने जादू करवा दिया है, औरतों में ये बात ज़्यादा पायी जाती है।
उन्होंने पहले से ये बात ज़हन नशीन कर ली होती है कि हम पर जादू किया गया है और जब उन्हें इसके बर खिलाफ़ बताया जाये कि आप पर किसी ने कुछ नहीं करवाया तो उन्हें तसकीन हासिल नहीं होती, गोया वो यही सुनना चाहते हैं कि मुझ पर किसी ने जादू करवा दिया है
अल्लाह त्आला रहम फरमाये।

अब्दे मुस्तफ़ा

हज़रते अमीरे मुआविया कातिब -ए- रसूल

हज़रते अमीरे मुआविया रदिअल्लाहु त्आला अन्हु को ये शर्फ भी हासिल है कि आप रदिअल्लाहु त्आला अन्हु नबीय्ये करीम ﷺ के कातिब थे और आम किताबत के इलावा हुज़ूर ﷺ ने आपको किताबत -ए- वही की भी ज़िम्मेदारी अता फरमायी।

(1) صحیح مسلم، ج4، ص1945، ر2501

(2) صحیح ابن حبان، ج16، ص189، ر7209

(3) المعجم الکبیر للطبرانی، ج13، ص554، ر14446

(4) مجمع الزوائد، ج9، ص357، ر15924

(5) دلائل النبوۃ، ج6، ص243

(6) تاریخ اسلام، ج4، ص309

(7) الشریعہ، ج5، ص2431

(8) المبسوط، ج24، ص47

(9) الاعتقاد، ص43

(10) الحجۃ فی بیان المحجہ، ج2، ص570، ر566

(11) الذخیرۃ، ج1، ص110

(12) الاباطیل والمناکیر، ص116، ر191

(13) کتاب الاربعین، ص174

(14) تاریخ دمشق الکبیر، ج59، ص55، ر7510

(15) کشف المشکل، ج2، ص96

(16) الفخری فی الآداب، ص109

(17) جامع المسانید، ج8، ص131، ر1760

(18) الاعتصام، ص239

(19) امتاع الاسماع، ج12، ص113

(20) تقریب التھذیب، ص470، ر6758

عبد مصطفی
AM ABDE MUSTAFA

(21)عمدۃ القاری،ج2،ص73،ر71

(22)المواھب اللدنیۃ،ج1،ص533

(23)ارشاد الساری،ج1،ص170،ر71

(24)الصواعق المحرقہ،ص355

(25)سمط النجوم،ج3،ص155

(26)تفسیر روح البیان،ج1،ص180

(27)فتاوی رضویہ شریف،ج26،ص492

(28)شان صحابہ،صفحہ نمبر32

(ماخوذ مِن مَن ھو معاویہ مصنفہ علامہ لقمان شاہد)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

क़िस्सा गो मुक़र्रिरीन मस्जिद से बाहर

एक मर्तबा हज़रते सैय्यदुना इब्ने उमर रदिअल्लाहु त्आला अन्हुमा मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो देखा कि वहां एक क़िस्सा गो बैठकर किस्सा सुना रहा है।
आपने एक सिपाही को उसकी तरफ मुतवज्जेह किया कि वो इसे मस्जिद से बाहर निकाल दे, चुनान्चे उस सिपाही ने इसे मस्जिद से बाहर निकाल दिया।
अगर क़िस्सा गोयी का ताल्लुक़ ज़िक्र की मजलिस से होता और क़िस्सा गो को उलमा में शुमार किया जाता तो हज़रते सैय्यदुना इब्ने उमर कभी भी उसे मस्जिद से बाहर ना निकालते।

(ملخصًا:المدخل لابن الحاج،ج1،ص333 بہ حوالہ قوت القلوب،ج1،ص708،ط مکتبۃ المدینہ کراچی)

हज़रते सैय्यदुना मौला अली रदिअल्लाहु त्आला अन्हु के बारे में भी मन्क़ूल है कि जब आप बसरा तशरीफ़ ले गये तो क़िस्सा गो मुक़र्रिरीन को मस्जिद से बाहर निकाला।

(ایضاً)

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे द्देहेल्वी रहीमहुल्लाह लिखते है कि सहाबा -ए- किराम ने क़िस्सा ख्वानों को मस्जिद से निकाला है और मारा भी है।

(القول الجمیل؛ بہ حوالہ فتاوی اجملیہ، ج4، ص101)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

सोचो फिर बोलो

हज़रते अबू हुरैरा रदिअल्लाहू त्आला अन्हु से रिवायत है कि नबीय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया कि :

बन्दा बाज़ अवक़ात एक ऐसी बात कह देता है जिस का नुक़्सान नहीं समझता, और उसकी वजह से वो दोज़ख में इस क़दर उतर जाता है, जिस क़दर कि मशरिक़ व मगरिब के दरमियान फासला है।

(- مسلم، الزھد، ص1219، ر48182

- وبخاری، الرقاق، ص544، ر6477

وترمذی، الرقاق، ص1885، ر2314 بہ حوالہ امثال صحیح مسلم، ص102)

बिना सोचे समझे बोलना हमारे लिये हलाकत का सबब बन सकता है।

किसी भी बात को बोलने से पहले गौरो फिक्र करना चाहिये।

कहीं ऐसा ना हो कि कोई एक जुमला हमें दोज़ख में डाल दे!

अल्लाह त्आला हमें फुज़ूल बातों से बचाये।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. ताहिर साहब

डॉ. ताहिर साहब के मुतल्लिक़ बहुतों ने बहुत कुछ लिखा, किसी ने रद्द में लिखा तो किसी ने दिफ़ा और हिमायत में लिखा।

अगर हम इन्साफ़ की नज़रों से देखें तो मालूम होगा कि जिन्होने हिमायत में लिखा है उनकी नज़रों पर डॉ. साहब के काम ने पर्दा डाल रखा है वर्ना उलमा -ए- अहले सुन्नत

ने डॉ. साहब के मुतल्लिक़ मुत्तफिक़ा तौर पर अपना नज़रिया पेश फ़रमा दिया है जो मिज़ाज -ए- शरीयत के ऐन मुताबिक़ है।
अब तक डॉ. साहब के बारे में जो फ़तावा, अक़्वाल और नज़रियात उलमा -ए- अहले सुन्नत की जानिब से मन्ज़र -ए- आम पर आये हैं वो लोगों की रहनुमायी के लिये शाफी व काफी है, मैं फक़त इतना अर्ज़ करना चाहूंगा कि:

दस्तार के हर पेच की तहक़ीक है लाज़िम
हर साहिब ए दस्तार मुअज़्ज़ज़ नहीं होता

शायर की मुराद तक भले ही मुझ कम फहम की रसायी ना हो सके लेकिन मैं इस शेर के ज़रिये ये कहना चहता हूं कि डॉ. साहब हो या आलम -ए- रूया में आइम्मा व मुहद्दिसीन से दस्तार हासिल करने वाला कोई सूफी, उनके दस्तार के हर पेच की तहक़ीक़ करना लाज़िम है क्यूँकी कभी कभी जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखायी नहीं देता।

अब्दे मुस्तफ़ा

क्या आप किताबें पढ़ते हैं?

इमाम ज़हबी "तज़किरतुल हुफ्फाज़" में खतीब -ए- बग़दादी के मुतल्लिक़ लिखते हैं कि वो रास्ते में चलते हुए भी (किताबों का) मुताला करते थे ताकि (कहीं) आने जाने का वक़्त ज़ाया ना हो!

(تذکرۃ الحفاظ، ج3، ص114 بہ حوالہ علم وعلما کی اہمیت، ص23، ط مکتبہ اہل سنت)

आज हम रास्ते मे चलते हुये पढ़ना तो बहुत दूर, घर में खाली बैठे हों तब भी किताबें पढ़ना पसंद नहीं करते। हमारे नौजवानों के बारे में तो पूछिये ही मत, इन्हें गाना सुनने, मोबाईल फ़ोन पर गेम खेलने, फ़ुज़ूल की चेटिंग करने और फिल्में देखने से ही फुर्सत नहीं है और अगर कभी कभार थोड़ा बहुत वक़्त खाली मिल भी जाये तो परेशान हो जाते है कि अब इसे कहाँ बरबाद किया जाये?
हम ये नहीं कहते कि आप रास्ते में चलते हुए किताबों का मुताला करें लेकिन कभी तो मुताला करें।

अपनी दौड़ भाग की ज़िन्दगी में से कुछ वक़्त किताबों के लिये भी निकालें, यक़ीनन ये आपके लिये मुफ़ीद साबित होगा।

जाते जाते एक बात और :-

मुमकिन है ये पढ़कर किसी को हैरानी हुई हो कि कोई रास्ते में चलते हुये भी मुताला किया करते थे लिहाज़ा हम उस हैरानगी में मज़ीद इज़ाफ़ा करने के लिये एक और वाक़िया बयान करते हैं, मुलाहिज़ा फरमायें।

हज़रते सा'अलब नहवी अलैहिर्रहमा की वफ़ात का सबब ये हुआ कि आप असर के बाद कहीं निकले और हाथ में एक किताब थी जिसे आप चलते हुये पढ़ रहे थे, एक घोड़ा आपसे टकरा गया और आप ज़मीन पर गिर पड़े! सर में काफ़ी चोट आयी उन्हे घर ले जाया गया और दूसरे दिन उनका इन्तिक़ाल हो गया ।

(خطبات ترابی، ج1، ص74)

अल्लाह त्आला की उन पर रहमत हो और उनके सदक़े हमारी मगफिरत हो और मुताले की तौफीक़ भी अता हो।

अब्दे मुस्तफ़ा

पहले पढ़ाई बाद मे ख़ाना

छठी सदी के मशहूर हम्बली आलिम, अल्लामा इब्ने अक़ील हम्बली मुताले का ऐसा शौक़ रखते थे कि ख़ाना खाने मे भी कोशिश फ़रमाते कि कम से कम वक्त लगे। आप अक्सर रोटी खाने से परहेज़ करते और वक़्त बचाने के लिए चूरे को पानी मे भिगो कर इस्तेमाल करते, फ़रमाते कि रोटी चबाने और खाने मे काफी वक़्त लग जाता है जबकि इस (चूरे) के इस्तेमाल से वक्त ज़्यादा निकल आता है।

(ملخصًا: طبقات حنابلہ بہ حوالہ علم و علما کی اہمیت، ص24، 27، ط مکتبہ اہل سنت)

इल्मे नहव के इमाम, खलील बिन अहमद फ़रमाते है कि वो सा'अतें (घड़ियाँ) मुझ पर बहुत गिरा गुज़रती है जिनमे मै ख़ाना खाता हूँ ।

(ایضاً، ص23)

मुहद्दिस -ए- कबीर हज़रते उबैद बिन यईश अलैहिर्रहमा फ़रमाते है कि मैने तीस साल से रात का ख़ाना नहीं खाया, मेरी बहन मेरे मुँह मे लुक्मा डालती है और मैं हदीस पढ़ता और लिखता।

(خطبات ترابی، ج4، ص250)

हज़रते अहमद बिन यहया शायबानी अलैहिर्रहमा को जब कोई दावत देता तो इस शर्त पर कूबूल फ़रमाते कि उन के लिए कोई ऐसी चीज मुहैय्या की जाए जिस पर मुजल्लद किताबें रख कर पड़ सके।

(ایضاً، ص249)

अल्लाहु अकबर! ये वो हस्तियां थी जिन्हे वक्त की एहमियत मालूम थी और मुताले से गैर मामूली मुहब्बत थी।

दौर -ए- हाज़िर मे दूर दूर तक इस की मिसाल नही मिलती।

आज अगर हम देंखें तो कुछ लोग सिर्फ नींद को बुलाने के लिए मुताला करते हैं और दूसरी तरफ जब बात फिल्म, नाटक वगैरा देखने की आ जाए तो आधी रात तक उल्लू की तरह आँखे खुली की खुली रहेती है।

माफ कीजियेगा, अहक़र का मकसद किसी को नीचा दिखाना या किसी का मज़ाक उड़ाना हरगिज़ नही, मैं तो फ़क़त एक हक़ीक़त को बयान कर रहा हूं जिसके नमूने हमे अपने इर्द गिर्द अक्सर देखने को मिलते है।

अल्लाह त्आला हमें वक़्त की एहमियत से वाकिफियत अता फरमाए और ईल्मो अमल से मुहब्बत अता फरमाए।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इश्क करना और इश्क होना

एक होता है इत्तेफाकन किसी पर पहली नज़र पढ़ते ही उस से प्यार हो जाना और एक होता है के हम पहले से ये सोच कर निकले के हमे किसी पर अपनी नज़र को अटकाना है और किसी से प्यार करना है। इन दोनो मे बहुत फर्क है।

आज कल जो ईश्क -ए- मिजाज़ी का बाज़ार गरम है वो इसी दूसरी किस्म का है के हमे एक महबूबा या एक आशिक की तलाश है।
जिस तरह इन्सान की जिंदगी मे दीगर कई मकासिद होते है के दौलत कमानी है, शोहरत हासिल करनी है, डॉक्टर, इंजिनियर बनना है ठीक इसी तरह कई लोगों ने इसे भी जिंदगी का एक मकसद बना लिया है के हमे एक महबूब तलाश करना है फिर उसे अपने दिल की बात बतानी है, उससे बाते करनी है, मुलाकात के लिए तड़पना है और दीगर मा'मलात करने है जो इश्क -ए- मिजाज़ी मे बुनियादी अहमीयत रखते है।
ऐसी फ़िक्र लोगों के अंदर पैदा करने मे फिल्मो, ड्रामो और बेहूदा गानो का बहुत बड़ा हाथ है, यही वो चीजे है जिन्होने लोगों का बिल खुसूस नौजवानों का दिमाग भ्रष्ट कर रखा है।
अभी तो हाल ये है की जिस ने जवानी की दहेलीज पर कदम भी नही रखा वो भी इश्क -ए- मिजाज़ी मे धोका खा कर बैठा है।
अगर आप चाहते है की आप की औलाद इस बला से महफूज रहे तो उन पर और ध्यान दे।
सिर्फ ये देखना काफी नही के उसने ख़ाना खाया या नही, स्कूल गया या नही, नहाया या नही बल्कि ये देखें की वो किस रास्ते पर है कही ऐसा ना हो के जल जाए बाग -ए- अरमा और कानो को खबर तक ना हो!

ABDE MUSTAFA

अब्दे मुस्तफ़ा

रट्टा मार मुकर्रिर

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते है के हामीद बिन अब्बास का एक दोस्त बिमार हो गया तो इयादत के लिए उसने अपने बेटे को भेजने का इरादा किया, भेजते वक्त बेटे को हिदायत की :
बेटा! जब वहाँ दाखिल हो जाओ तो ऊंची जगह पर बैठना और मरीज़ से पूछना के आपको क्या तकलीफ है?

जब वो कहे फुलां फुलां तक्लीफ है तो जवाब मे कहना इंशा अल्लाह ठीक हो जाओगे, फिर पूछना के कौन से हकीम से इलाज करवाते हो? जब वो किसी हकीम का नाम ले तो कहना अच्छा है, मुबारक है फिर कहना के गीज़ा (खाने) मे क्या इस्तेमाल करते हो? जब वो किसी गीज़ा का नाम बताए तो कहना के अच्छा ख़ाना है बेहतर गीज़ा है।

बेटा अपने बाप की नसीहत को सुन कर इयादत के लिए वहाँ पहुचा तो मरीज़ के सामने एक मीनार था, वो नसीहत के मुताबीक उस पर बैठा तो अचानक वहाँ से गिर पड़ा और मरीज़ के सीने पर जा पड़ा और उसे मज़ीद तकलीफ मे मुब्तला कर दिया, फिर मरीज़ से पूछा के आप को क्या तकलीफ है? मरीज़ ने कहा के मरजूल मौत मे हूँ।

इसने कहा की इंशाअल्लाह जल्द नजात पाओगे। (यानी जाने का वक्त करीब है)

फिर पूछा किस हकीम से दवाई लेते हो?

मरीज़ ने कहा मल्कूल मौत, इसने कहा की मुबारक है, बा बरकत है

फिर पूछा कौन सी गीज़ा इस्तेमाल करते हो?

मरीज़ ने कहा मरने वाला जहेर!

इसने कहा के बहुत मज़ेदार गीज़ा है!

(ملخصًا: اخبار الحمقی والمغفلین مترجم، ص278، 279، ط کرمانوالہ بک شاپ لاہور)

फ़ि ज़माना अक्सर मुकर्रीरीन का मामला भी इससे काफी मिलता जुलता है। मज्कूरा बेटे ने जिस तरह अपने बाप की नसीहत को समझने की बजाए रट लिया इसी तरह हमारे जोशीले मुकर्रिरीन "बारह तक़रीरें" और "पच्चीस खूत्बात" वगैरा रट कर मैदान - ए- तकरीर मे उतर जाते है और फिर अंजाम का अंदाज़ा आप मज्कूरा बाला वकिये से लगा सकते है।

अब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. ताहीर और वक़ार -ए- मिल्लत

(पार्ट 1)

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वकारुद्दिन कादरी रज़वी अलैहिर्रहमा की बारगाह मे सवाल किया गया के एक शख़्स ने ख़्वाब देखा जिस मे नबीय्ये करीम ﷺ ने उस से फरमाया के तुम अगर पकिस्तान मे मेरे मेज़बान बन जाओ तो मैं पकिस्तान मे कुछ दिनो के लिए रुक सकता हू, उस शख़्स ने एक रिसाले मे यही ख़्वाब बयान करते हुए कहा के हुज़ूर ﷺ ने पकिस्तान मे मुझे अपना मुस्तकील मेज़बान मुकर्रर कर दिया है, इस जुमले पर कुछ लोग ऐतराज़ करते है और इसे शान -ए- रिसालत मे तौहीन बताते है लेहाज़ा आप से दरख़्वास्त है के शरियत की रौशनी मे फ़तवा सादिर फरमाएं के क्या शख़्स -ए- मज़कूर किसी शरई जुर्म का मुर्तकीब हुआ है या नही?

वकार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा जवाब मे लिखते हैं के ताहीरुल कादरी का ये ख़्वाब नवाये वक्त लाहौर, तक्बीर और दीगर रसाईल मे छपा है।

हकीकत ये है के ख्वाब इंसान के इख्तेयार मे नही और इन्सान ख़्वाब मे अजीबो गरीब ऊमूर भी देखता है मगर अपनी फ़ज़ीलत के लिए किसी ख़्वाब को छापना या बयान करना, ये इन्सान का इख्तेयारी फे'ल है लिहाज़ा ताहिरुल कादरी का ख़्वाब बयान करते हुए ये कहना के हुज़ूर ﷺ ने पकिस्तान मे मुझे अपना मुस्तकील मेज़बान मुकर्रर कर दिया है और वापसी के टिकट का भी मुतालबा किया है और बहुत सी बातें बयान की जिन मे हुज़ूर ﷺ के मोहताज होने और ताहीरुल कादरी से मदद तलब करने और एक उम्मती के मुकाबले मे नबी की मुहताजी का इज़हार होता है लिहाज़ा ये तौहीन -ए- नबी ﷺ है और तौहीन करने वालो की जो सज़ा है ताहीरुल कादरी उस सज़ा का मुस्तहिक है।

(ملخصًا: وقار الفتاوی، ج1، ص324، 325)

अब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. ताहिर और वकार -ए- मिल्लत

(पार्ट 2)

वकार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से दूसरे मकाम पर सवाल किया गया के प्रोफेसर ताहीरुल कादरी अहले सुन्नत व जमात से तअल्लुक रखते हैं या नहीं? और हमे इन के बारे मे क्या राऐ रखनी चाहिए? इनके बारे मे एक रिसाले मे पढ़ा है के ये देवबंदीयो के

पीछे नमाज़ को जाएज़ समझते है और उन से जो ईख्तेलाफात है उसे फूरुइ गर्दानते है तो इस का वाज़ेह मतलब ये है के ये गुस्ताखान -ए- रसूल ﷺ को काफिर नही समझते और इन के नज़दीक ईहतेराम -ए- रसूल ﷺ भी फूरुइ मस'अला है, तो क्या ये शख़्स

"مَن شك فی کفرہ و عذابہ فقد کفر"

(जो ईन गुस्ताखान -ए- रसूल के कुफ़्र और अज़ाब मे शक करे वो काफिर है) के तहत आएगा या नही?

आप अलैहिर्रहमा जवाब मे लिखते है के प्रोफेसर ताहीरुल कादरी का कहना यही है के ये इख्तिलाफात फूरुइ है।

28 सितंबर 1987 के जंग अखबार मे ये खबर छपी है इन्होने होटल मे औरतो से खिताब किया, एक खातून ने जब इन से सवाल किया के जब इस्लाम इत्तेहाद का दर्स देता है तो फिर इतने फिर्के क्यू? इस पर प्रोफेसर ताहीरुल कादरी साहब ने जवाब दिया की तमाम फिर्को की बुनियाद एक है, सिर्फ जुदा जुदा तरीका है इसलिए इत्तेहाद मुतास्सीर नही होता और इन्होने अपने इंटरव्यूव मे पहले भी कहा था के इनके यहाँ दो मुदर्रस देवबंदी है और एक शिया है लिहाज़ा इसी से अंदाज़ा कर लीजिए के इनके खयाल मे और "नदवा" वालो के खयाल व एतिकाद मे क्या फर्क है।

(وقار الفتاوی، ج1، ص325،326)

अब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. ताहीर और वक़ार -ए- मिल्लत

(पार्ट 3)

वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से एक और मक़ाम पर सवाल किया गया की ज़ैद कहता है कि डॉ. ताहिरुल क़ादरी एक सच्चे आशिक़ -ए- रसूल हैं और इख्लास के साथ दीन की खिदमत करने वाले हैं, मुझे ताहिरुल क़ादरी की इस बात (कि देवबन्दियों के पीछे नमाज़ जायज़ है) के इलावा तमाम बातों से इत्तिफाक़ है और मैं इनके कामों से मुतमईन हूँ और इन्हें बद मज़हबों का चाहने वाला नहीं समझता लिहाज़ा ये इरशाद फरमायें कि :

(1) क्या ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है?

(2) ज़ैद के और अहले सुन्नत के अक़ाइद में जो फर्क़ है उसे वाज़ेह फरमा दें।
वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इस ज़माने में इस्लाम का दावा करने वाले मुख्तलिफ गिरोह हैं और हर एक यही दावा करता है कि मैं आशिक़ -ए- रसूल हूँ मगर किसी शख्स के स्टेज पर (दिये गये) बयानात से उसके अक़ाइद का पता नहीं लगाया जा सकता है।
किसी शख्स के अक़ीदे और मज़हब का पता उसकी तहरीरों से चलता है, ताहिरुल क़ादरी बहुत ज़माने से अपने इंटरव्यूस में ये कहता रहा है कि शिया, देवबन्दी, गैर मुक़ल्लिद और बरेलवी चारों मज़ाहिब में फ़ुरुयी इख्तिलाफ़ात हैं! इनमें उसूली इख्तिलाफ़ नहीं।
इसका मतलब ये हुआ की हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा पर तोहमत लगाना, हज़रते अबू बकर वा हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा को खलीफा -ए- बर हक़ ना जानना, इनकी खिलाफत का इंकार करना, क़ुरान -ए- करीम को बयाज़े उसमानी समझना, ये तमाम बातें प्रोफेसर साहब की नज़र में फ़ुरुयी हैं, हालांकि खिलाफत -ए- अबू बकर के हक़ होने पर सहाबा -ए- किराम का इज्मा है और इज्मा -ए- सहाबा का मुनकिर काफ़िर है।
हज़रते आइशा सिद्दीक़ा पर तोहमत लगाने वाला क़ुरान का मुनकिर है और क़ुरान को बयाज़े उसमानी कहने वाला भी काफ़िर है।
ताहिरुल क़ादरी ने अपने इस अक़ीदे की खुलकर ताईद कर दी है।
मिन्हाजुल क़ुरान जो इनका अपना रिसाला है उसके दिसम्बर 1990 के शुमारे में छपा है :
मौजूदा नाज़ुक हालत में अहले तशी को काफ़िर क़रार देने वाले और भोले भाले मुसलमानों में इसका प्रोपगन्डा करने वाले खुद परस्त इन्तिहा पसन्द मौलवी साहिबान तो हो सकते है, अहले सुन्नत व जमा'अत हरगिज़ नहीं हो सकते।
इसके चन्द सुतूर बाद लिखा है:
इस हक़ीक़त -ए- बाहिरा और बुरहान -ए- क़ातिआ के बावजूद अहले तशी को बिल मज्मू काफ़िर समझना, कहना या क़रार देना मुतलक़न बातिल है, बिल्कुल इस नहज

पर कोई फ़िरक़ा या कोई फ़र्द अहले सुन्नत को काफ़िर समझे, कहे या क़रार दे वो भी क़तयी तौर पर बातिल होगा।
दर हक़ीक़त हनफ़ी, देवबंदी, बरेलवी, शिया, मालिकी, हम्बली, शाफयी, और अहले हदीस सब के सब मुसलमान हैं, इन फ़िरक़ों में फ़ुरुयी इख्तिलाफ़ तो बहर तौर मौजूद हैं मगर बुनियादी इख्तिलाफ़ कोई नहीं।
देवबंदियों की तौहीन -ए- नबी पर मुश्तमिल वो किताबें जिन पर उलमा -ए- हरम, शाम वा मिश्र ने हुक्मे तक्फ़ीर किया और ये लिखा :

"مَن شك فی کفرہ و عذابہ فقد کفر"

जो इसमें शक करे वो भी काफ़िर है।
वो किताबें अब तक इसी तरह छप रही हैं, प्रोफेसर के नज़दीक ये भी फ़ुरुयी इख्तिलाफ़ हैं।
इन चन्द मिसालों से ये ज़ाहिर हो गया कि प्रोफेसर साहब का एक नया मज़हब है और इनके मज़हब के मुताबिक़ इन बातिल फ़िरक़ों और अहले सुन्नत में कोई फ़र्क़ नहीं है, वो सबको मुसलमान समझते हैं और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ समझते हैं।
अगर ज़ैद का कौल ना वाक़िफी की बिना पर है तो उसे समझना चाहिये और उनको आशिक़ -ए- रसूल के बजाये इस्लाम का बरबाद करने वाला कहना चाहिये, अगर ज़ैद जान बूझकर ऐसा करता है तो उसका भी वही हुक्म है जो उलमा -ए- हरमैन ने बयान किया है लिहाज़ा उसकी इमामत बातिल वा नाजायज़ है, मुसलमानों को इससे इज्तिनाब करना चाहिये।

(وقار الفتاوی، ج1، ص326 تا328)

अब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. ताहीर और वक़ार -ए- मिल्लत

(पार्ट 4)

वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से एक सवाल ये किया गया कि इदारा -ए- मिन्हाजुल क़ुरान के बानी प्रोफेसर ताहिरुल क़ादरी का प्रोग्राम मसलक -ए- अहले सुन्नत की तरवीजो तरक़्क़ी के लिये है या नहीं? और जो मौलवी प्रोफेसर ताहिरुल क़ादरी के हम खयाल हैं वो मसलक -ए- अहले सुन्नत से ताल्लुक़ रखते हैं या नहीं? ऐसे मौलवियों के पीछे नमाज़ पढ़ना शरयी लिहाज़ से दुरुस्त है या नहीं?
आप अलैहिर्रहमा जवाब में फरमाते हैं कि ताहिरुल क़ादरी ने जब ये कहना शुरू किया कि बरेलवी, देवबंदी, गैर मुक़ल्लिद और शिया के इख़्तिलाफ़ात फ़ुरूयी हैं और सबको मुसलमान शुमार किया तो इससे ज़ाहिर हो गया कि वो पाकिस्तान में नया "नदवा" क़ाईम कर रहा है और इसके नज़दीक हज़रते अबू बकर व हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा को गाली देना और हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा पर तोहमत लगाना भी फ़ुरूयी बात है और इसके नज़दीक ये लोग मुसलमान हैं और जिन लोगों की किताबें तौहीन -ए- नबी से भरी पड़ी हैं उनको भी मुसलमान क़रार देना इनके मज़'उमा फ़ुरूयी इख़्तिलाफ़ का नतीजा है लिहाज़ा ऐसा शख्स सुन्नी कैसे हो सकता है? और अब हाल ही में जिन पार्टियों से इत्तिहाद किया है उससे भी ये हक़ीक़त आश्कार हो जाती है।
ये शख्स सुन्नियत को तबाह करने वाला है।
अहले सुन्नत से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं है, इसके हम खयाल मौलवी और हम नवा मौलवी, इमाम, इमामत के लायक़ नहीं।
अहले सुन्नत इनसे अपने ताल्लुक़ात मुन्क़ता कर लें।

(وقار الفتاوی، ج1، ص328)

अब्दे मुस्तफ़ा

हिसाब लगाइये

एक बेवकूफ से पूछा गया के तू कब पैदा हुआ? तो उस ने जवाब मे कहा:
मैं निस्फ (आधे) रमज़ान मे चाँद नज़र आते ही तीन दिन बाद पैदा हुआ हूँ, अब जैसे चाहो हिसाब लगा लो।

(اخبار الحمقی والمغفلین مترجم، علامہ ابن جوزی، ص265)

डॉ. ताहिरुल कादरी के बयानात और किताबों का हाल भी कुछ ऐसा ही है के आप पढ़ कर जैसे चाहे हिसाब लगा ले।
डॉ. साहब अपने एक बयान मे कहते है के 1400 साल की इस्लामी तारीख मे किसी सूफ़ी ने किसी को काफिर नही कहा, किसी की तक्फीर नही की और फिर दूसरे कई बयानात मे कुफ्र के फतवे जारी करते हुए नज़र आते है, कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ,
एक तरफ सहाबी -ए- रसूल की इज़्ज़त की बाते करते है और दूसरी तरफ फ़ज़ाइल बयान करने से मना करते है,
एक तरफ ईख्तेलाफ करने की खुसूसी दावत बांटते है और दूसरी तरफ कहते है के कोई मौलवी मेरे फतवे से ईख्तेलाफ कर के दिखाए!
सारी बाते डॉ. साहब खुद कहेते है, तज़ाद ही तज़ाद है अब मैं सिर्फ इतना कहूंगा के आप हिसाब लगा ले।

अब्दे मुस्तफ़ा

आयत बाद में नाज़िल हुई

नबीय्ये करीम ﷺ ने रोम के बादशाह हिरक़िल (हिरक़िल/हिरक़्ल) की तरफ एक मक्तूब रवाना फरमाया।
उस मक्तूब में हुज़ूर ﷺ ने ये आयत -ए- मुबारका लिखवायी।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ

(آل عمران:64)

ताज्जुब की बात ये है कि मज़कूरा आयत उस वक़्त नाज़िल ही नहीं हुई थी!
ये आयत उस मक्तूब के भेजने के तीन साल नाद नाज़िल हुई है।
इस सिलसिले में अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी अलैहिर्रहमा लिखते हैं की नबीय्ये करीम ﷺ ने इस आयत के नुज़ूल से पहले ही इसको लिख दिया था और बाद में जब

ये आयत नाज़िल हुई तो आप ﷺ के लिखे हुए के मुवाफिक़ थी और ये भी हो सकता है कि ये आयत दोबारा नाज़िल हुई हो लेकिन ये बईद है।

(فتح الباری، ج1، ص517 بہ حوالہ نعم الباری فی شرح صحیح البخاری)

हज़रत अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि मैं कहता हूं कि इस में इब्ने अरबी के इस क़ौल की तायीद है कि क़ुरान -ए- मजीद के मुकम्मल नुज़ूल से पहले आप ﷺ को इसका इज्माली इल्म था।

(نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، کتاب الوحی، ج1، ص161)

अब्दे मुस्तफ़ा

हालते नमाज़ में ताज़ीम -ए- नबी

हज़रते इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि मैं रात के आखिरी हिस्से में रसूलुल्लाह ﷺ के पास गया और आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगा, हुज़ूर ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे (बायीं तरफ से दायीं तरफ) अपने आगे किया, फ़िर जब आप नमाज़ पढ़ने लगे तो मै पीछे आ गया।

फ़िर आप ﷺ ने नमाज़ से फारिग़ होने के बाद मुझ से फरमाया :

इसका क्या सबब है कि मै तुम्हें आगे करता था तो तुम मेरे पीछे हो जाते थे?

मैने कहा : या रसूलुल्लाह ﷺ, क्या किसी शख्स के लिये ये जाइज़ है कि वो नमाज़ में आपसे आगे हो जाये हालांकि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह त'आला ने आपको इतना (बुलन्द तरीन) मर्तबा अता किया है!

मेरे इस जवाब से रसूलुल्लाह ﷺ खुश हुये और मेरे लिये ये दुआ की कि अल्लाह मेरे इल्मो फहम को ज़्यादा फरमाये।

(مسند امام احمد بن حنبل، ج5، ص178، ر3060)

इस रिवायत को इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी अलैहिर्रहमा ने भी नक़ल किया है।

(فتح الباری، ج1، ص625)

शैख शुएब अल अरनौत कहते है कि इस हदीस की सनद सहीह है और इमाम बुखारी वा इमाम मुस्लिम की शर्त के मुताबिक़ है।

(حاشیہ مسند احمد بن حنبل، ج5، ص178)

शैखुल हदीस, हज़रते अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्हिमा ने बुखारी शरीफ की शरह में इस रिवायत को नक़ल किया है।

(نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج1، ص340)

सुब्हान अल्लाह! सहाबी -ए- रसूल हालत -ए- नमाज़ में भी नबीय्ये करीम ﷺ की ताज़ीम कर रहे हैं।

आपका ताल्लुक़ किसी भी मक्तबा -ए- फ़िक्र से हो, आप एक बार अपने दिल पर हाथ रख कर सोचें कि आज ये कौन से दीन की दावत दी जा रही है कि नमाज़ में हुज़ूर ﷺ का खयाल लाना दुरुस्त नहीं है और अपने बैल और गधे के ख्याल में मुस्तगरक होने से ज़्यादा बुरा है क्योंकि हुज़ूर ﷺ का खयाल तो ताज़ीम और बुज़ुर्गी के साथ आता है और बैल और गधे का खयाल ताज़ीम और बुज़ुर्गी के साथ नहीं आता! और गैर की ये ताज़ीम जो नमाज़ में मल्हूज़ हो वो शिर्क की तरफ खींचकर ले जाती है। (मआ़ज़ अल्लाह)

(-صراط مستقیم، اردو، ص150

صراط مستقیم، فارسی، ص86، ملخصًا)

ये इबारत वहाबियों के पेशवा इस्माईल दहेलवी की है और आज भी ये किताबें छप रही हैं।

अगर नमाज़ में हुज़ूर ﷺ का खयाल शिर्क की तरफ़ ले जाता है तो क्या सहाबी- ए- रसूल का नमाज़ में हुज़ूर की ताज़ीम करना भी राहे शिर्क पर क़दम रखना है?

अभी भी वक़्त है, ऐसी इबारतों और ऐसे अक़ीदे को दीवार पर दे मारें। जो ऐसे खयालात रखता हो और इन नजरियात का हामी हो उससे मुँह मोड़ लें ताकि कल ब रोज़े महशर हुज़ूर ﷺ के क़दमों में जगह पा सकें।

बहुत सादा सा है उसूल -ए- दोस्ती कौसर अपना

जो उनसे बे ताल्लुक़ हो हमारा हो नहीं सकता।

और,

शौक़ तेरा अगर ना हो मेरी नमाज़ का इमाम
मेरा क़ियाम भी हिजाब मेरा सुजूद भी हिजाब।

अब्दे मुस्तफ़ा

मुख्तसर तज़किरा -ए- वक़ार -ए- मिल्लत

जामेअ माक़ूलात व मनक़ूलात, पीर -ए- तरीक़त, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादरी रज़वी अलैहिर्रहमा अपने ज़माने के मशहूर आलिम -ए- दीन थे। आप की शख़्सियत अहले सुन्नत के आसमान पर एक चमकता सितारा है जिस की रौशनी हमेशा बरक़रार रहने वाली है।

14 सफर उल मुज़फ्फर 1333 हिजरी को पीलीभीत (हिन्दुस्तान) में आप की पैदाइश हुई आप के वालिद का नाम हमीदुद्दीन और वालिदा का इम्तियाज़ -उन- निसा था, आप के वालिद, चचा और खानदान के कई अफ़राद हाफिज़ -ए- क़ुरान थे, इस से मालूम होता है के आप का घराना इस्लामी माहौल के रंग से रंगा हुआ था।

ईब्तिदाई तालीम :

स्कूल में पाँचवी (5वीं) क्लास तक तालीम हासिल की और जब पाँचवी क्लास का इम्तिहान हुआ तो पूरे ज़िले भर मे आप को पहला दर्जा हासिल हुआ और इनाम भी मिला।

उसके बाद आपके इसरार पर आप को पीलीभीत के एक मदरसे मे दाखिल करवाया गया।

उस मदरसे मे आप के असातिज़ा में हज़रत मुफ़्ती वसी अहमद मुहद्दिसे सूरती के खास शागिर्द मौलाना हबीबुर रहमान भी थे।

चार साल उस मदरसे मे तालीम हासिल की और फिर बरेली शरीफ के "दारुल उलूम मन्ज़र -उल- इस्लाम" में दाखिला लिया।

बरेली शरीफ में आप ने सदरुश्शरिया, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी, मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा सरदार अहमद क़ादरी, अल्लामा तकद्दुस अली खान, मौलाना सरदार अली खान,और मौलाना एहसान इलाही वगैरा को अपने असातिज़ा के रूप मे पाया।

बै'अत व खिलाफत :

आप को हुज्जतुल इस्लाम, हज़रत अल्लामा हामिद रज़ा खान बरेलवी के दस्त पर बै'अत होने का शर्फ हासिल हुआ और उन के छोटे भाई मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद से खिलाफ़त भी हासिल हुई।

इल्मी मकाम :

आप के इल्मी मकाम का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक गाँव के कुछ लोगो ने मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद से कहा गैर मुकल्लिदीन ने हमे परेशान कर रखा है लेहाज़ा आप किसी आलिम को (मुनाज़रे के लिए) भेज दीजिए, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद की निगाहों में जो नाम आया वो वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा का था, आप मुनाज़रे के लिए तशरीफ ले गए और अल्लाह त'आला ने आप को फतह अता फ़रमाई।

आप के मुताले का ये आलम था के पूरी पूरी रात मुताले मे गुज़ार देते थे!

1947 मे आप ने पकिस्तान का रुख कर लिया और फिर वहीं दर्सो तदरीस मे मशगूल हो गए और रोज़गार के सिलसिले मे आप तिजारत करते थे।

आप ने अपने ज़माने मे उठने वाले फित्नों का भरपूर रद्द किया जिस मे एक डॉ. ताहिर का फितना भी है।

विसाल :

हदीस की तालीम देते हुए 16 रबीउल अव्वल 1410 हिजरी में आप का इन्तेकाल हुआ।

(ماخوذ من وقار الفتاوی)

अब्दे मुस्तफ़ा

हमारे ज़माने की औरतें

औरतों के मस्जिद जाने के मुतल्लिक़ उम्मुल मोमिनीन, सैय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा फरमाती हैं कि अगर रसूलुल्लाह ﷺ औरतों के इस बनाव सिंगार को देख लेते जो इन्होनें अब इजाद किया है तो इनको (मस्जिद में आने से मना) फरमा देते जिस तरह बनी इसराईल की औरतों को मना किया गया था।

(بخاری شریف، ج1، ص472، ر869)

अल्लामा बदरुद्दीन अयनी हनफ़ी (मुतवफ्फ़ा 855 हिजरी) लिखते हैं कि अगर हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा औरतों के इस बनाव सिंगार को देख लेती तो जो इन्होने हमारे ज़माने में इजाद कर लिया है और अपनी नुमाईश में गैर शरयी तरीक़े और मज़मूम बिदआत निकाल ली हैं, खास तौर पर शहर की औरतों ने तो वो (हज़रते आइशा सिद्दीक़ा) इन औरतों की बहुत ज़्यादा मज़म्मत करती।

(عمدۃ القاری، ج6، ص227)

अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि अगर अल्लामा अयनी हमारे ज़माने की फेशन ज़दा औरतों को देख लेते तो हैरान रह जाते।
अब अक्सर औरतों ने बुरक़ा लेना छोड़ दिया है, सर को दुपट्टे से नहीं ढांपटी, तंग और चुस्त लिबास पहनती हैं, ब्यूटी पार्लर में जाकर जदीद तरीक़ों से मेकप कराती हैं, मर्दों के साथ मख्लूत (मिक्स) इज्तिमात में शिरकत करती हैं, मैराथन दौड़ में हिस्सा लेती हैं, बसन्त में पतंग उड़ाती हैं, वेलेंटाइन डे मनाती हैं, इस क़िस्म की आजाद रविश में औरतों के मस्जिद में जाने का खैर कोई इम्कान ही नहीं।

(نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج2، ص798)

मै (अ़ब्दे मुस्तफ़ा) कहता हूं कि अब तो हालात यहाँ तक पहुँच चुके हैं कि बाज़ अवकात ये फैसला करना मुश्किल हो जाता है कि सामने कोई जनाब है या मुहतरमा! ऐसा फैशन निकला है के मर्द और औरत मे तमीज़ करना दुशवार हो गया है।
एक फिक्र लोगो के ज़हनों में डाली जा रही है कि "औरतें मर्दों से कम नही है" और इसी मुकाबले के चक्कर में औरतों ने शर्मो हया नाम की चीज़ को अपनी लुगत (डिक्शनरी) से मिटा (डिलीट कर) दिया है!
अब तो ऐसा लगता है कि इनके लिये सिर्फ दुआ ही की जा सकती है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

बड़ी मस्जिद और कम नमाज़ी

हज़रते सय्यिदुना अनस रदीअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं के नबीये करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया :

लोगों पर एक ऐसा भी ज़माना आएगा के जब वो मसाजिद की तामीर में एक दूसरे के सामने फख्र का इज़हार करेंगे और उन मे से थोड़े लोग इन्हें (यानी मसाजिद को नमाजो से) आबाद करेगे।

(صحیح ابن خزیمہ، ج2، باب کراھۃ التباھی فی بناء المساجد...الخ، ر1321، ط شبیر برادرز لاہور)

हुज़ूर ﷺ ने जो कुछ इरशाद फरमाया वो हर्फ़ बा हर्फ़ हक है और आज हम अपनी आंखो से इस का मुशाहिदा कर रहे हैं।

आलीशान मसाजिद तामीर कर दी गयी हैं, एक मर्तबा मे हज़ारो बल्कि कई जगह तो लाखो लोग नमाज़ अदा कर सकते है लेकिन नमाज़ पढ़ने वाले गिने चुने लोग हैं।

फजर की नमाज़ मे बाज़ मकामात पर कभी कभार ऐसा भी होता है के इमाम और मो'ज्जिन के इलावा तीसरा कोई नही पहुँचता।

मसाजिद की तामीर मे एक दूसरे के सामने फख्र का इज़हार तो यूँ किया जाता है जैसे इसी के मुताबिक़ हमे आ़खिरत मे आला दर्जा दिया जाना है।

अल्लाह त'आला हमे मसाजिद को आबाद करने की तौफीक अता फरमाए।

अब्दे मुस्तफ़ा

दर्द उम्मती को, तकलीफ़ जन्नती हूर को!

हज़रते सैय्यिदुना मआज़ बिन जबल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि रसूल - ए- करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया कि जब कोई औरत अपने शौहर को तंग करती है तो (जन्नती) हूरें जो कि जन्नत में उस (शौहर) की ज़ौजा होंगी, कहती हैं :

ए औरत! इसे तंग ना कर, तेरा सत्यानास, ये शौहर तो तेरे पास (कुछ दिनों का) मेहमान है अन क़रीब ये तुझे छोढ़ कर हमारे पास आ जायेगा।

(انظر: ابن ماجہ، باب فی المراۃ توذی زوجھا، ج1، ص560، ملخصًا)

इस हदीस को बयान करने का मक़सद सिर्फ ये बताना नहीं है कि औरतों को अपने शौहर को तकलीफ़ नहीं देनी चाहिये बल्कि इस रिवायत से दो अहम मस'अले भी मालूम हुये :

(1) अगर किसी बन्दे को दूर से पुकारना शिर्क होता तो जन्नती हूरें दुनिया की औरतों को ना पुकारती और जो कहता है कि नबी को पुकारने से मस्जिद गंदी हो जाती है तो फिर बा क़ौल उसके गैरे नबी को पुकारने की वजह से जन्नत भी गंदी हो जानी चाहिये।
(2) जब कोई औरत दुनिया में अपने शौहर को तंग करती है तो जन्नत की हूर सुन लेती है, जब जन्नत की एक मख्लूक़ की समा'अत का ये आलम है तो मालिक -ए- जन्नत, साहिब -ए-शरीअ़त ﷺ की समा'अत का क्या आलम होगा।
मुमकिन है कि किसी के पेट में इस हदीस की सनद को लेकर दर्द उठे लिहाज़ा दवा के तौर पर हम बताना चाहते हैं कि नासीरुद्दीन अल्बानी ने इस हदीस को सहीह कहा है।

(صحیح سنن ابن ماجہ، جلد 1، صفحہ نمبر 341)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

तूबा

जन्नत मे एक दरख़्त है जिस का नाम तूबा है।
इस दरख़्त के बारे मे एक रिवायत है के हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के दरख़्त -ए- तूबा, अखरोट के दरख़्त के मूशाबे है।
एक शख़्स ने पूछा के या रसूलुल्लाह ﷺ! उस की जड़ कितनी बड़ी है?
आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के अगर तुम ऊँट पर सवार हो तो वो ऊँट चलते चलते बूढ़ा हो जाए और तुम उस की जड़ का इहाता नही कर सकोगे।
हज़रते अबू इमामा रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने कहा के तूबा जन्नत का एक दरख़्त है जिस की शाखें जन्नत के हर घर मे है और उस दरख़्त पर खूब सूरत फल है और हर हसीन परिंदा उस दरख़्त पर बैठा है।

(عمدۃ القاری، ج5، ص216 بہ حوالہ نعم الباری فی شرح صحیح البخاری)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

अली दा चौथा नंबर

हज़रते सय्यिदुना मौला अली रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने फ़रमाया के जो मुझे हज़रते अबू बकर सिद्दिक और हज़रते उमर फारूक रदीअल्लाहु त'आला अनहुमा से अफज़ल कहे, मैं उस बोहतान लगाने वाले को बोहतान की हद्द (यानी 80 कोड़े) लगाऊंगा।

(1)فضائل الصحابۃ لاحمد بن حنبل، ج1، ص294، ر387

(2)السنۃ لعبد اللہ بن احمد بن حنبل، ج2، ص562، ر1312

(3)المؤتلف والمختلف للدار قطنی، ج2، ص807

(4)-السنۃ الابن ابی عاصم، جلد2، صفحہ نمبر575، رقم1219

(5)الاعتقاد والھدایۃ علی سبیل الرشاد علی مذھب السلف واصحاب الحدیث للبیھقی، ص358

(6)الکفایۃ فی علم الروایۃ للخطیب، ص376

(7)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب لابن عبد البر، ص434، ر1490

(8)مختصر تاریخ دمشق لابن منظور، ج19، ص20

(9)الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، ج1، ص90

(10)الصواعق المحرقۃ علی اھل الرفض والضلال والزندقۃ، ج1، ص177

(11)العطایا النبویۃ فی الفتاوی الرضویۃ، ج29، ص367

(12)مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین لامام احمد رضا، ص143

(13)مسند امیر المومنین ابی حفص عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ واقوالہ علی ابواب العلم لابن کثیر، ج2، ص523

(ماخوذ من مولود کعبہ کون)

अब्दे मुस्तफ़ा

चाँद और सूरज जहन्नम मे जाएँगे!

हज़रते अब्दुल्लाह दानाज और सलमता बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ बसरा की जामा मस्जिद मे बैठे हुए थे, इमाम हसन बसरी आए और वो वहीं बैठ गए। हज़रते अब्दुल्लाह दानाज ने हदीस बयान की :

नबीये करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के बेशक चाँद और सूरज कियामत के दिन दो बैल होंगे जिन को लपेट कर दोज़ख मे डाल दिया जाएगा!

इमाम हसन बसरी ने पूछा :

उन का क्या गुनाह होगा जो उन्हे दोज़ख मे डाल दिया जाएगा? तो अब्दुल्लाह दानाज ने कहा के मैं तुम को रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस सुना रहा हूँ, ये सुन कर हसन बसरी ख़ामोश हो गए।

इस का जवाब ये है के इन्हे दोज़ख मे डालना बतौर -ए- सज़ा नही है बल्कि सूरज और चाँद की परस्तिश करने वालो की मज़म्मत और उन को रुसवा करने के लिए इन्हे दोज़ख मे डाला जाएंगा के देखो! जिन को तुम ख़ुदा समझते थे और जिन की परस्तिश करते थे, तुम को अज़ाब से बचाना तो दरकिनार आज वो खुद को दोज़ख से नही निकाल सकते।

(-اعلام الحدیث فی شرح صحیح البخاری للامام ابی سلیمان حمد بن محمد الخطابی، ص1476، ر3200

-مشکوٰۃ المصابیح، ج3، ص107، ر5692

نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج6، ص224، 225)

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिर्रहमा लिखते है के चाँद और सूरज अज़ाब पाने के लिए दोज़ख मे नही जाएँगे बल्कि अपने पुजारियों को अज़ाब देने जाएँगे। इनकी गर्मी अज़ाब की गर्मी से मिल कर अज़ाब को दो बाला कर देगी, देखो! दोज़ख मे अज़ाब देने के लिए फिरिश्ते भी तो होंगे मगर वो अज़ाब पाने के लिए वहाँ नही गए बल्कि अज़ाब देने के लिए होंगे,

नीज चाँद और सूरज नूर हैं और नूर को नार तकलीफ नही देती,

देखो मोमिनीन, गुनाहगारों को निकालने के लिए दोज़ख मे जाएँगे मगर बिल्कुल तकलीफ ना पाएंगे।

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج7، ص405، ح5692)

अब्दे मुस्तफ़ा

गुनाहों का नेकियो मे बदलना

अल्लाह त'आला फ़रमाता है :

مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا○

(الفرقان:70)

यानी जिस ने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अमल किये तो ये वो लोग है जिन के गुनाहों को अल्लाह नेकियो से बदल देगा और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बेहद रहम फरमाने वाला है।

इमाम अबु मन्सूर मातुरीदी (मुतवफ्फा 333 हिजरी) इस आयत की तफ्सीर मे लिखते है :

गुनाहों को नेकियो से बदलने के दो माना है,

एक ये के गुनाह करने वाले जब अपने गुनाहों से तौबा कर लेते है और ईन गुनाहों पर नादीम होते है तो अल्लाह त'आला इन को आइन्दा की ज़िंदगी मे ये तौफीक अता फरमाता है के वो हर गुज़िश्ता गुनाह की जगह एक नेकी कर लेते है और यूँ (इस तौफीक के सबब) ईन का हर एक गुनाह नेकियो मे तब्दील हो जाता है, और दूसरा माना ये है के दुनिया मे लोगो को अगर अपने गुनाहों पर नदामत और हसरत पैदा हो जाए तो अल्लाह त'आला आख़िरत मे उन गुनाहों को नेकियो मे तब्दील फ़रमा देगा.

(تاویلات اھل السنۃ، ج8، ص45 بہ حوالہ نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج8، ص410)

हमारे गुनाहों की तादाद ब ज़ाहिर नेकियो से कई ज़्यादा है!

हमे अपने गुनाहों पर नादीम होना चाहिए और हमेशा गुनाहों से बचने की कोशिश करते रहनी चाहिए ताकि अल्लाह त'आला हमारे गुनाहों को नेकियो मे बदल दे,

बेशक अल्लाह त'आला की रहेमत के आगे ये एक छोटी सी चीज है।

अब्दे मुस्तफ़ा

जाहिल हुफ्फाज़ की मनघढ़त रिवायत

बाज़ जाहिल हुफ्फाज़ बच्चे को पढ़ाते कम और मारते ज़्यादा हैं और जब उन्हें मना किया जाये तो एक रिवायत बयान करते हैं कि उस्ताद की मार से दोज़ख की आग हराम हो जाती है और जिस जगह उस्ताद की मार पड़ेगी उस जगह दोज़ख की आग नहीं जलाएगी।

उस्ताद साहब एक तो मार भी रहे हैं और ऊपर से इसकी हिकमत भी बयान फरमा रहे हैं! वाह उस्ताद साहब!

शैखुल हदीस, हज़रत अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि बाज़ जाहिल हुफ्फाज़ और क़ुर्रा ने ये हदीस घड़ी कि उस्ताद की मार से.....अलख

ये हदीस झूठी और मनघड़त है और नबी पर झूठ बांधना गुनाह -ए- कबीरा है

इन झूठों से पूछा जाये कि ये रिवायत हदीस की किस किताब में मज़कूर है?

(انظر: نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج10، ص257)

ABDE MUSTAFA

अब्दे मुस्तफ़ा

Our Other Pamphlets

ABDE MUSTAFA